Historicity Research Journal
Volume 1 | Issue 4 | Dec 2014 ISSN:- 2393-8900

Research Article

मध्यकालीन भारत मे सूफी आन्दोलन : एक अध्ययन

शेख शहाजहान

इतिहास विभाग प्रमुख , आझाद कॉलेज. औसा. लातूर.

सारांश **:**

'सूफी'शब्द के मूल स्त्रोत के सम्बन्ध मे विद्वानों में काफी मतभेद हैं | कुछ लोग इसे ग्रीक शब्द 'सोफिया' (ज्ञा-ा) □ा रुपान्तर मानते हैं | कुछ लोगों का कहना है कि जो व्यक्ति पवित्र थे, वे 'सुफी' कहलाये | कुछ का कथन है कि मदी-ा में मुहम्मद साहब द्वारा बनवाई गई मस्जिद के बाहर 'सुफ्फा'अर्थात् चबूतरे पर जिन गृहहीन व्यक्तियों ने आकर शरण ली थी तथा जो पवित्र जीवन बिताते हुए ईश्वर की आराधना में लीन रहते थे, वे 'सुफी' कहलाए[१] |

प्रस्तावना :

अबू नस्त्र -अल-सिराज र्कीः □हना है कि सूफी शब्द सूफ अर्थात् ऊन से निकला है | मुहम्मद साहब के बाद जो संन्यासी ऊन-कम्बल ओढ़कर घूमा करते थे तथा अपने मत का प्रचार करते थे, वही सूफी कहलाये | अधिकांश विद्वान् इस अन्तिम मत को मानते हैं | किन्तु ग्रीक शब्द 'सोफिया' (ज्ञान) से यह शब्द बना है | इस कथन में भी कुछ यथार्थता दिखाई देती है, क्योंकि सूफी अनुभव सिध्द ज्ञा-□ो ही महत्त्व देते है[२] |

उत्पत्ति और विकास :

विश्व □ भिन्न- भिन्न भा□ों में भिन्न- भिन्न धर्मावलम्बो रहते हैं, लेकिन सभी व्यक्ति एक सर्वशक्तिमान् ईश्वर की उपासना □रते हैं, हालोंकि उनके साधन भिन्न-भिन्न हैं | आगे चलकर इन धर्मों से भी अनेक मत या सम्प्रदाय उत्पन्न हो जाते हैं जो अपने आप को एक धर्म के रूप में प्रतिष्ठित कर लेते हैं| ऐसा ही एक धर्म सूफी धर्म है, जो इस्लाम धर्म से उत्पन्न हुआ है[३] |

सूफी मत को बहुत से सूफियों ने सबसे प्राचीन धर्म का है और बताया है कि इसके मूल प्रवर्तक स्वयं आदम या आदिम पुरूष थे | कुछ सूफी लोग इसके प्रथम प्रचारक हजरत मुहम्मद साहब को मानते हैं और कुछ लोग इसके मौलि□ सिध्दन्तों का 'कुरान शरीफ' में अभाव पाकर इसके प्रचार का श्रेय अली या किसी ऐसे महापुरुष को देते हैं जो पैंगम्बर का साथी हर चुका हो | इस मत के सिध्दान्त कुरान शरीफ में न होने के कारण बहुत से कट्टर मुसलमानों ने इसे विधर्मियों का मत ठहराते हुऐ इसकी निन्दा की है | सरदार इकबाल अली शा़ह ने लिखा है कि सूफी शब्द मुहम्मद साहब के देहान्त के दो सौ वर्ष बाद सत्ता में आया प्रतीत होता है | सूफी शब्द □ा सर्वप्रथम प्रयो□ ८६९ ई. में बसरा (अरब) निवासी जिहाज द्वारा किया गया था | परन्तु जामी के अनुसार इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग ८०० ई. से पूर्व कूफा के अबू हाशिम के लिए हुआ था[४] | वास्तव में इस शं्ब्द का प्रचार ८ वीं शताब्दी के पूर्वार्ध्द मं हुआ था | डॉ. ताराचन्द सूफी मत का उद्‌गम - □ुरा-न, मुहम्मद साहब □ा जीवन, ईसाई धर्म, अभिनव अफलातूनी, हिन्दू एवं बौध्द धर्म और जरथूस्त्र धर्म मानते है |विधा-नों से मुँह मोड़कर इस विश्व की झलक पाकर जो रहस्य मुस्लिम साधकों ने अभिव्यक्त किया है, उन्हीं के सामंजस्य का नाम सूफी मत है | सूफी मत एक रहस्यवाद है, जो स्वतन्त्र होते हुए भी मूलत: मुस्लिम सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखता है[५] |सूफीवाद के इतिहास में अबू याजीद उल

बिस्तानी नामक सूफी का महत्त्वपुर्ण स्थान है | उसने 'तसव्वुफ' (अपने ा मानसिक इच्छाओं से ऊपर करके हर चीज में भगवान ा रुप देखता) में चरम आनन्द और जगत् व्यापी ईश्वर को मानकर एक नवीन धारा प्रदार की | उसने काहा कि, "मैं ईश्वर हूँ, अत: मेरी उपासना करो |"उलेमाओं ने इसका विरोध किया और उसे देश से निकाल दिया | ८५७ ई. में उसका देहान्त हो गया | उसके पन्थ का नाम 'तैफूरी' पड़ा जिसका फरस में काफी प्रचार हुआ |एक अन्य सूफी शेख जुनैद ने 'तसव्वुफ' के पुराने विचारों का नये विचारों के साथ सम-वय र-ने ा पयास किया | ९१० ई. में इसकी मृत्यु के बाद मंसूर नामक संत ने उसके विचारों का प्रचार किया | हुसेन इन मंसूर अल हल्लाल नामक सूफी ने, जो तसव्वुफ प्रकाण्ड विद्वान् और तत्त्वज्ञा-नी था, फारस, ुरासान, तुर्किस्तान और उत्तरी-पश्चिमी भारत का भ्रमण किया और घोषित किया कि मानव ईश्वर का अवतार हो सकता है | ईश्वर की अनुभूति प्राप्त कर उसके 'अनल हक' (मैं ईश्वर हूँ) का उद्घोष किया | फलत : उसे न्यायालय ने फॉसी की सजा दे दी | आगे चलकर इब्न-उल-अरबी और अब्दुल करीम जिली ने उसकी विारधारा का प्रचार किया | उलेमा लोंग सूफी मत का विरोध किया करते थे, क्योंकि सूफी मत इस्लाम के अनुकूल नहीं था | अत: अबू हामिद मुहम्मद अल गजाली नामक सूफी संत ने सूफीवाद को इस्लाम के अनुकूल करके उसके महत्त्व को बढ़ा दिया | ११ वीं शताब्दी के अन्त से १२ वीं शताब्दी के आरम्भ तक (१११२ ई. तक) उसके बगदाद और खुरासान में अपने मत का प्रचार किया[६] |

सुफी दर्शन एवं सिध्दान्त :

जिस समय सूफी धर्म का विकास हुआ उस समय भारत में वेदान्त धर्म एवं दर्शन और यूरोप में धार्मिक पुनर्जागरण ा लहर फैल रही थी | अत : सुफी दर्शन एवं सिध्दान्तों पर समकालीन घटनाओं का प्रभाव पड़ा | सुफी धर्म में प्रेम को बहुत महत्त्व दिया जाता है | सुफी लोग एक ईश्वर को मानते है | ये लोग ईश्वर को 'प्रियतमा' ा रुप मानते हैं, जिसकी खोज में आम्मा रूपी 'प्रियतम' समस्त सांसारिक सुखों का त्याग कर चला जाता है | साधक को चरम लक्ष्य की प्राप्ति के लिये 'इश्क' रूपी मार्ग का अनुसरण करना पड़ता है | इनका विश्वास है कि ईश्वर अमर सौंन्दर्य है तथा उसकी प्राप्ति प्रेम संगीत से की जा सकती है | अत: इस धर्म में सौन्दर्य और संगीत को अधिक महत्त्व दिया जाता है |

सूफी लोग लौकिक प्रेम में पड़कर ईश्वरीय-प्रेम (इश्क-ए-ुदा) का अनुभव और तसव्वुर एवं सौन्दर्य-पूजा (हुस्नपरस्ती) में ईश्वर के सौन्दर्य (अल्लाह के जमाल) का साक्षात्कार करते हैं | अत: प्रेम के मार्ग का अनुसरण करके विभिन्न अवस्थाओं ा पार र चरम लक्ष्य की प्राप्ति करते हैं [७] | सूफियों की मान्यता है कि ईश्वर निर्गुण है | उनकी यह भी मान्यता है कि मनुष्य में तीन प्रवृत्तियाँ होती हैं - शारीरिक, बौध्दिक और आत्मिक | आत्मिक प्रवृत्ति को शुध्द रखने से व्यक्ति उच्च व पवित्र बन जाता है, लेकिन यह कार्य गुरू के पथ-प्रदर्शन से ही सम्भव है | सूफियों को कुछ हिदायतें दी है, जो इस प्रकार हैंस्वभावत : मनुष्य कामी, क्रोधी, लालची तथा बन्धनयुक्त होता है | यह मनुष्य की 'उबूदियत' अवस्था है | 'उबूदियत' की अवस्था में साधक का यह कर्तव्य है कि वह अपने पापों (गुनाहों) के लिये पछतावा (तोबा) करे और विश्वास (ईमान) अर्जित करे | तत्पश्चात् उसको शरीयत के अनुसार नमाज, रोजा, तोहीद, जकात और हज का पालन र-ना चाहिये ताकि दुर्गुणों का नाश हो सके और'इश्क-ए-खुदा'में पड़ सके | जब वह पूर्णत: अनुशासित हो जाता है तो वह 'तरीकत'अवस्था में प्रवेश करता है | 'तरीकत' में साधक को गुरू (शेख अथवा पीर) की आवश्यकता होती है, जो उसकी आचरण शुध्दि तथा प्रवृत्तियों का संयम रखने का आदेश देता है, जिससे उसे ईश्वर की अनुभूति हो सके | शिष्य को ुरू प्रति समर्पित होना चाहिये, क्योंकि गुरू पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि है | गुरू की प्रत्येक आज्ञा शिरोधार्य करनी चाहिये तथा ुरू के आदेशानुसार उसे संस्मरण (जिक्र) में भाग लेना चाहिये | जिक्र दो हैं - जिक्र अली (चिल्लाकर मन्त्रोचारण करना) और जिक्र खफी (हृदय की एकाग्रता) | दोनों का मंत्र 'ला-इल्लाह-इल्लल्लाह'(खूदा एक है) ही है | जिक्र के साथ 'मुराकेबा' नामक क्रिया भी की जाती हैं, जिसमें हृदय की व्याकुलता को दूर करने के लिये कुरान का पाठ, रोजा और भोजन एकत्र करना पड़ता है | 'मारिफत' की अवस्था दयालुता और कृपालुता से प्राप्त होती है | इससे मस्तिष्क दैवीज्ञान से प्रकाशित हो उठता है और 'हकीकत' की अवस्था में साधक को सात्विक ज्ञान की प्राप्ति होती है | 'फना' की अवस्था में सांसाकिर प्रवृत्तियों का विनाश होता है और साधक ईश्वरोन्मुख हो जाता है | साधक की अन्तिम अवस्था 'बका' कहलाती है, जिसमं साधक (प्रेमी) और प्रियतमा (ईश्वर) के बीच की दूरी समाप्त हो जाती है और दोनों एकरूप हो जाते हैं | साधक स्वयं ईश्वर हो जाता है (अनलहक) और इस अवस्था का कभी अन्त नहीं होता[८] |

भारत में सूफी सम्प्रदाय :

ऐसी मान्यता है कि भारत पर मुसलमानों के प्रथम आक्रमण (७६९ ई.) से पूर्व सूफी सम्प्रदाय का भारत में प्रवेश हो चुका था | उमरय्या वंश के शासनकाल में अरब व्यापारियों साथ भी-कभी सूफी फकीर भी आ जाते थे तथा दक्षिण भारत एवं सिन्ध में अपने मत का प्रचार करते थे | किन्तु सूफी मत की वास्तविक शुरूआत भारत में उस समय हुई जबकि अबुल हसन हज हुज्विरी (मृत्यु ११२९ ई.) ने अपनी प्रसिध्द पुस्तक 'कश्फूल महजूब' की रचना की | वे गजनी के निवासी थे और लाहौर में एक बन्दी की स्थिति मं आये गये थे | सूफी मत की दीक्षा इन्होंने बगदाद मं प्राप्त की थी | वे अविवाहित जीवन के समर्थक थे और स्वयं ने भी विवाह नहीं किया था | उनकी इतनी प्रतिष्ठा थी कि कालान्तर में जितने भी सूफी बाहर से भारत आये, वे उनकी समाधि पर उपस्थित हुए | 'कश्फुल महजूब' की रचना उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम समय में ी थी | उनकी मृत्यु लाहौर में हुई, जहाँ उनकर कब्र अभी तक विद्यमान है | उनके इस ग्रन्थ से ज्ञात होता है कि आपने सूफी मत को इस्लाम धमर के सच्चे रूप का प्रतीक माना और इसी दृष्टिकोण से प्रचार किया[९] |

हूज्विरी के बाद प्रसिध्द सूफियों में बाबा फखरुद्दीन (मृत्यु १२२५ ई.) का नाम उल्लेखनीय है जो दक्षिण भारत में पेन्नु कोंडा नामक स्थान पर रहेते थे | एक अन्य प्रभावशाली सूफीसैयद मुहम्मद बन्दा निवाज गेसू दराजहुए | इनकी रचना 'मेराजुल आशकीन' को हिन्दी भाषा का आदि रूप उपस्थित करने वाली पुस्तक कहा जाता है | इन लोगों के अतिरिक्त भारत में अनेक सूफियों ने यहाँ प्रचार किया, किन्तु वे अपना स्थायी प्रभाव नहीं छोड सके | भारत में सूफी मत का स्थायी प्रभाव डालने वाले व्यक्तीयों में वे लोग थे जो इस मत भि--न-भिन्न चार उप संम्प्रदायों-चिश्तियाँ, सहरवर्दिया, कादिरिया तथा नक्शबंदिया से सम्बन्ध रखते थे[१०] |

नि-ष र्ष :

संक्षेप में सूफी संम्प्रदायों की विभिन्न शाखाओ ने अपने प्रचार से संपूर्ण भारत को प्रभावित किया संम्प्रदायों उन्होने अपने धार्मिक सिध्दांतो ा ुछ बातों की और विशेष ध्यान दिलाने का प्रयास किया तथा भारत मे अपने मूलधर्म इस्लाम ा जड जमाने मे सफल हो गये | सूफीयों मे इस्लामी कट्टरपण अधिक नही था | हिंदू समाज व हिन्दू परंपरा की अनेक बातों ा वे शिघ्र अपना लेते थे, और इसी कारण साधारण जनता मे घुलमीलकर अपनी बाते सरलतापूर्वक समझा देते थे | हृदय ा शुध्दता, बाह्य आचरण की पवित्रता ईश्वर के प्रति अधार श्रध्दा पारस्परिक सहानुभूति, विश्वबंधुत्व और विश्व प्रेमकी बातो की और लोगों को आकर्षित करते थे | सूफीयों मे अनेक ऐसे प्रचारक और व्यवहारकुशल व्यक्ति थे, जिन्होने भारत मे काफी लोकप्रियता प्राप्त कर ली थी | यही कारण है की आज भी जब सुफी सन्तो की मजार पर उर्स लगता है, तब मुस्लिमो के साथ साथ अनेक हिंदू भी उनकी मजार पर बडी श्रध्दा से चादर चढाते हैं |

संदर्भ सूची :-

१.डॉ. कालूराम शर्मा, डॉ. प्रकाश व्यास- मध्यकालीन भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास,पंचशील प्रकाशंन, जयपूर, २००४ पृ. . २८७
२.डॉ. कौसर यजदानी - सुफी दर्शन एवं साधना,जे.पी मिडिया प्रा.लि. दिल्ली पृ.क्र. ९
३.पगडी सेतू माधवराव - सुफी संप्रदाय,पृ. . - १९
४.तिवारी रामपूजन - साधना और साहित्य,प्रज्ञान मंडल, वाराणसी, सन संवंत २००५ पृ.क्र. - ६५-६६
५.मो. फारू ाँ- एक ईश्वर की कल्पना,मरकजी मकतब, नई दिल्ली पृ.क्र. ५१
६.डॉ. मिर्झा खिज्र - दखने सुफीमत, शोध निबंध संग्रह, पृ.क्र. ३५३
७.डॉ. कालूराम शर्मा, डॉ. प्रकाश व्यास- मध्यकालीन भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास,पंचशील प्रकाशंन, जयपूर, २००४ पृ. . २८८
८.डॉ. एजाज शेख - सुफी संम्प्रदाय (तत्त्वज्ञान : धार्मिक, सामाजिक)- चिन्मय प्रकाशन, औरंगाबाद, २००९ पृ. . २२-२३
९.ि त्ता - पृ. . २९
१०. निकलसन आर.ए. - इस्लाम में सूफी साधक , दिल्ली, पृ.क्र. १८